रात्रि क्लास 16/5/1965 ॐ

बच्चे ईश्वरीय पाठशाला में बैठे हैं। यह वण्डरफुल पाठशाला है। पाठशाला में जवान भी हैं, बूढ़े भी हैं। स्त्री–पुरुष सब पढ़ते हैं। ऐसी कोई पाठशाला होती नहीं है। जानते हो भगवानुवाच्य– हे बच्चो! तुमको सहज राजयोग फिर से सिखाने आया हूँ। बच्चे जानते हैं यह सहज राजयोग जो बाबा सिखाते हैं ये नई बात नहीं। कल्प–2 यह पढ़ाई होती है। हमारी पढ़ाई का वर्सा जो मिलता है वो है भविष्य 21 जन्म लिए। सच्ची और अखंड कमाई है बेहद की। 21 जन्म लिए हीरे जैसा मालामाल बनना है। ऐसी कमाई कोई कराए न सकते। झूठी कमाई का विनाश होना है। तुम बच्चों के हाथ भरतू रहेंगे। बाकी सब हाथ खाली जावेंगे। तुम सच्ची कमाई इक्कीस जन्मों लिए करते हो। तुम यहाँ आए हो भविष्य 21 जन्मों लिए कमाई करने। वो धंधा करने वाले क्या कमाते होंगे। पढ़ते हैं करके दो–पाँच हज़ार पगार मिलेगा, सो भी अल्प काल लिए। तुम बच्चे जानते हो हम ये कमाई भविष्य 21 जन्मों लिए करते हैं। कल्प–(2) यही कमाई करते आवेंगे। कैसे विचित्र पाठशाला है। भगवान की पाठशाला है। भगवान तो सभी का एक ही होता है। पढ़ाते भी बच्चों को है। आत्माएँ निराकार हैं जो इन साकार द्वारा सुनती है। बच्चे जानते हैं शिवबाबा जो पतित–पावन है उनसे हम वर्सा ले रहे हैं। इस समय के पुरुषार्थ से 21 जन्मों की प्रालब्ध बनती है। बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते ये भी कमाई करो। भगवान खुद कहते हैं भक्ति का फल देने आया हूँ। तुमको भगवती–भगवान बनाते हैं। श्री ल०ना० को ये वर्सा बाप ने ही दिया होगा। कैसे देते हैं सो अभी तुम जानते हो। कल्प पहले मुआफिक बाप पढ़ाय रहे हैं। कितना ऊँच बाप पतित देश में आते हैं। कहते हैं .... बच्चों ..... हूँ। तुम जानते हो श्रीमत द्वारा हम फिर से आदि सनातन स्वराज्य की स्थापना कर रहे हैं। वो लोग सिर्फ धर्म की स्थापना करते हैं। तुम स्वराज्य स्थापन कर रहे हो योगबल से। बाहुबल वाले कब विश्व का मालिक बन न सके। अब बुद्धि से काम लेना चाहिए बाप से वर्सा लेवे या वो धंधा आदि करे। आसुरी कोर्स साथ ईश्वरीय कोर्स भी उठाना है। बाकी होंगे कितना समय। अभी ये दुनिया बदल रही है। सतयुग को नवयुग कहा जाता है। ये है कल्याणकारी संगमयुग जबकि आत्माएँ आकर परमात्मा से मिलती है। बाप समझाते हैं माया तुमको हार खिलावेगी; परन्तु श्रीमत पर चलने से तुम हार न खावेंगे। बाप को भूलने से ही तुम ठोकर खाते हो। बाप कहते हैं मीठे बच्चों प्वाइंट्स से हराओ मत। बड़ी जबरदस्त कमाई है। ये तुम्हारी कल्प–2 की कमाई है। तुम आए हो शिवबाबा पास विश्व का मालिक बनने। बाप कहते हैं मैं मालिक नहीं बनूँगा, तुमको बनाता हूँ। रावण तुमको हराते हैं, मैं जीत पहनाता हूँ। माया से घड़ी–2 हार न खानी चाहिए। उस्ताद की श्रीमत पर चल वर्सा लेना चाहिए। माया ने तो सबको मूर्छित कर दिया है। बाप संजीवनी बूटी ले आए हैं। बाप को तरस पड़ता है हमारे बच्चे माया से हार खाते हैं। समझाते हैं– बच्चे, अभी बेहद के बाप से पूरा वर्सा लेने से कल्प–(2) लेते रहेंगे। सच्चा सतसंग ये है। सत् के संग से हमको बादशाही मिलती है। सर्व का सद्गति दाता एक बाप है। तो ऐसे बाप की श्रीमत पर चलना चाहिए ना। श्रीमत पर चल अपना कल्याण करना है। तुम काँटे से फूल बने हो तो फिर औरों को भी बनाना है। श्रीमत पर चलने से कब भी धोखा न खावेंगे। फिर रेस्पॉन्सिबुल बाप हो जावेगा। धर्मराज भी तो साथ है ना। बाप की श्रीमत से अपना सुख का खाता जमा करना है। बाप ऐसे नहीं कहते धंधा आदि न करो। सिर्फ बाप की राय से करो। बाप की मत पर चलने से तुम कब धोखा न खावेंगे। अच्छा, बापदादा (का) सिकीलधे बच्चों ... यादप्यार और गुडनाइट।